INDEX

S. No.	Date	Name of Experiment	Experiment No.	Page No.	Signature / Remarks
1.		पठन भाषा कौशल के रूप		1-3	
2.		प्रवाह महत्ता		4-8	
3.		आख्यान		9-10	
4.		वार्तालाप		11	
5.		वार्तालाप की महत्ता		12	
6		जीवनी रेखाचित्र		14	
7.		नाटक		15	
8.		कविताएं		17	
9.		पत्र		18	
10.		रिपोर्ट		20	
11.		गहन अध्ययन		23	
12.		लेखन कौशल का विकास		24-29	
13.		लेखन प्रक्रिया		30-35	

UNIT - I

मातृ भाषा कौशल के रूप में

भाषा ⟶

भाषा एक ऐसी योग्यता है, विशेषकर प्राचीन मानवीय योग्यता, जिसके द्वारा यह संचार की जटिल प्रणाली को ग्रहण कर इनका प्रयोग करता है। भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों, संवेगों, भावनाओं और दृष्टिकोण का आदान प्रदान करते हैं। भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन को भाषा विज्ञान कहा जाता है। किसी भी भाषा को सीखने के लिए उसकी चार मौलिक कौशलों पर महारत की आवश्यकता होती है।

भाषा के चार बुनियादी कौशल ⟶

एक परिभाषा के अनुसार भाषा स्वर प्रतीकों की प्रणाली है। जो लोगों को संवाद या विचार करने की अनुमति देती है। इन प्रतीकों में मौखिक व लिखित रूप, इशारे और शारीरिक भाषा भी शामिल है। इसके चार मूलभूत भाषायी कौशल सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना। अपने शिक्षण में आपको इन सभी कौशलों में सिखाना होगा। लोग आमतौर पर इन सभी कौशलों में सिखाना होगा। लोग आमतौर पर इन चार कौशलों को क्रम में सीखते हैं।

1. श्रवण ⟶ जब मनुष्य कोई नई भाषा सीखता है तो पहले वह उसे सुनता है।

2. कथन → श्रवण के नतीजे वे जो कुछ सुना है उसे दोहराने की कोशिश करते है!

3. पठन → फिर वे लिखित प्रतीकों के माध्यम से बोली जाने वाली भाषा को देखते है!

4. लेखन → अंत: वे कागजों पर इन प्रतीकों को पुन: उत्पन्न करते है।

भाषायी कौशलों का महत्व →

भाषा आपके अधिगम की धुरी है। इसके बिना आप किसी विषय को समझकर संवाद नहीं कर सकते हमें अपनी भाषायी कौशलों के विकास की जरूरत है। जैसे -

1. → अपने विषय से संबंधित विशिष्ट उद्देश्य और भाषा का विन्यास करें!

2. → अपनी विषय सामग्री को समझकर उसको प्रभावशाली ढंग से प्रयोग कर सके।

3. → प्रक्रियाओं के लिए प्रासंगिक सवाल व सामग्री का चयन करना!

4. → साहित्यिक चोरी के बिना, प्रस्तुत असाइनमेंट्स को अच्छी व संरचित ढंग से लिखना!

प्रवाह (FLUENCY)

पठन कौशल → पठन लिखित रूप में ग्रहण या सीखने संबंधी कौशल है। यह श्रवण और कथन कौशलों का भी विकास कर सकता है। लेकिन अकसर यह कौशल इनके साथ ही अत्यधिक विकसित होता है। विशेषकर एक अत्यधिक विकसित साहित्यिक परंपरा वाले समाज मे पठन शब्दकोष निर्माण मे सहायक है। जो बाद में चरणों मे विशेषकर समझ के साथ सुनने में मदद करता है। परंपरागत रूप से एक भाषा को सीखने का उद्देश्य उस भाषा मे लिए गए साहित्य को समझना है भाषा के अनुदेशन पठन सामग्री पारंपारिक रूप से साहित्य के उच्च रूपों को प्रतिनिधित्व करके चुना गया है। निचले स्तर के अधिगमकर्ता अपनी आवश्यकतानुसार भाषायी कौशलों का विकास करते है।

भाषा के शिक्षण संप्रेषणीय उपागम ने प्रशिक्षकों की भूमिका पठन कौशल के द्वारा विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्रियों को समझाने की निश्चित की है। जब अनुदेशन का उद्देश्य संप्रेषणीय सक्षमता है। जैसे —: ट्रेन अनुसूचियाँ अखबारों मे लेख और यात्रा व पर्यटन की वेबसाइट की सूची इत्यादि तब से ये कक्षा कक्ष सामग्री

बन गई है। पठन एक उद्देश्य सहित गति विधि है। पठन एक व्यक्ति हासिल जानकारी करने या मौजूदा ज्ञान को सत्यापित करने या किसी लेखक के विचारों या लेखन शैली की आलोचना करने के लिए पढ़ सकता है।

पाठकों की चयन ग्रंथों की मार्गदर्शिका के उद्देश्य →

→ पढ़ने के उद्देश्य पढ़ने की समझ के लिए उचित दृष्टिकोण का निर्धारण करते हैं। एक व्यक्ति जो ज्ञान के लिए कविता पढ़ रहा है उसके लिए जरूरी है वो ज्ञान के कवि ने किन शब्दों का प्रयोग किया है।

पठन कौशल का अर्जन →

पढ़ने के लिए सीखना, पठन के लिए आवश्यक कौशलों को अर्जित करना है। मुद्रण प्रतीकों से अर्थ समझने की योग्यता। आमतौर पर पठन प्रक्रिया आरंभ होने से पहले ही संज्ञा भाषाओं व सामाजिक कौशल विकसित हो चुके होते हैं।

एक बच्चे की पढ़ने की योग्यता पठन तत्परता कहलाती है। जो बचपन में शुरू होती है। क्योंकि बालक अपने वातावरण से कथन संकेतों को समझकर बोलना शुरू कर देता है। बच्चों को वे सभी सामग्री धारणा संकल्पना और शब्द जो उसके संपर्क में आती है। एक बच्चा अपने ज्ञानदाता कर्ता के पास बैठा चित्रों को देखता है। तब वह धीरे-धीरे उन संकेतों और शब्दों को पहचानना शुरू कर देता है।

पठन कौशल में सुधार लाने में सहायक तकनीकें

कुशल पठन के लिए जरूरी संकेतों x नहीं है कि ध्वनिगत जागरूकता हो, लेकिन भाषा के अलग-2 भागों की जागरूकता अति आवश्यक है।

शब्दावली :

पठन की समझ का एक महत्वपूर्ण पहलू शब्दावली का विकास है। जब पाठक को अपरिचित लिखित शब्द को पढ़ता है और उच्चारण करता है। तब वह उसे समझाएगा।

पठन समझ :

पठन की समझ एक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रिया है। जिसमें पाठक जान-बूझकर और सहयोगितापूर्ण विषय-वस्तु से अनुक्रिया करता है।

लिखनें का विकास :

वर्तन भाषा में प्रयुक्त तरीकों का एक समूह है। जिसमें इन प्रतीकों लिखने के नियम भी शामिल है। कुशल पठन के लिए बच्चों को भाषा के तत्वों जैसे बड़े अक्षर, शब्द विराम जोर या बल व विराम चिह्नों इत्यादि में समझना आवश्यक है।

हिं ड्रिल और अभ्यास :

ड्रिल और अभ्यास भाषा की किसी भी मूलभूत कौशल को समझने में सबसे प्रतिष्ठित करकों में से एक है। मुद्रित शब्दों के बार-2 अभ्यास से पठन के कई पहलू विकसित होते है।

प्रवाह :

यह मौखिक रूप से गति, सटीकता, और मौखिक अभिव्यक्ति के साथ पढ़ने की क्षमता है। धारा प्रवाह पढ़ने के लिए आवश्यक तत्वों में से एक है।

आख्यान

आख्यान शब्द लैटिन भाषा के Narrari से निकला है। जिसका अर्थ है बताना। एक आख्यान किसी घटना, क्रम से जुड़ी, रिपोर्ट, वास्तविक या काल्पनिक होती है। जो स्थिर या चलती ध्वनियों या लिखित या ~~मौखिक~~ रूप से क्रमबद्ध होती है। यह कई वर्ग में विभाजित होता है। ज्यादातर लोगों के बचपन के दौरान, आख्यान उन्हें उचित व्यवहार सांस्कृतिक व्यवहार, सम्प्रदायिक पहचान बनाने, उचित मूल्यों के निर्माण में मार्गदर्शन करता है। ~~आर्थिक~~ अधिक सामान्य तौर पर इसे ऐसे तरीके के रूप परिभाषित किया जा सकता है।

आख्यान पढ़ना काफी चुनौतीपूर्ण है। हो सकता है इसके लिए आवश्यक है कि आख्यान को बारीकि से पढ़े। अनापेक्षित किरणों को ध्यान से पढ़े देखें, छिपी हुई भावनाओं और अर्थों को ध्यान से समझें।

आख्यान पाठ अक्सर प्रतिभाशाली, रूप को और प्रतीकों के माध्यम से, कल्पनाशील भाषा का प्रयोग करके संवेगों को अभिव्यक्त कर कहानी सुनाता है।

क्योंकि कहानियां कई महत्वपूर्ण उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त होती है। छात्र जब आख्यान पढ़ते है। तब उन्हें हताश दूर करने और कथा ढांचे को समझने की आवश्यकता है। जब छात्र कथा तत्वों को समझते है तब वे आसानी से कहानी का पालन कर सकते है। इसके अलावा इन तत्वों को समझना स्तरीय रूप से अद्वितीय है।

आख्यान पढ़ने के उद्देश्य:

(1). छात्रों को अपने वास्तविक अनुभवों के बारे में लिखने मे सक्षम बनाना।

(2). छात्रों को छोटे – छोटे शब्दों पर ध्यान केन्द्रित कर उनका वाक्यों में वर्णन करने योग्य बनाना।

(3). छात्रों को अच्छी शुरुआत और चिंतनशील अंत लिखने में सक्षम बनाना।
अपने लेखन में उपयोग करने में

(4). छात्रों को दूसरे लेखकों की तकनीकों को अपने लेखन में उपयोग करने में पारंगत करना।

(5). छात्रों में प्रभावी व्याख्यान × आख्यान लिखने के योग्य बनाना।

DATE
PAGE 11

वार्तालाप:

बातचीत दो या दो से अधिक लोगो के बीच उस क्रिया सहज संचार का रूप है। आमतौर पर यह मौखिक संप्रेषण में घटित होता है। क्योंकि लिखित अदान-प्रदान को आमतौर पर वार्तालाप नही कहा जा सकता। वार्तालाप कौशल और शिष्टाचार के विकास सामाजीकरण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जो संवादी बातचीत का ध्यान देते हुए मानवीय अंत क्रिया की संरचना व संगठन का अध्ययन करता है।

वार्तालाप के लाभ:

1. बेहतर समझ
2. बेहतर आत्मविश्वास
3. कार्यस्थल मूल्य
4. बेहतर आत्म देखभाल
5. बेहतर संबंध

वार्तालाप के उद्देश्य :

1) अधिक जानकारी आसानी से शब्दों को की अभिव्यक्ति विकसित करने के लिए।
2). समस्याओं का निदान व हल करने के लिए।
3). रूची और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए।
4). संवेगों को अच्छी तरह से अभिव्यक्त करने के लिए शब्दावली समृद्ध करने के लिए।

वार्तालाप कौशलो को कैसे सुधारे :

1). धीरे से बात :

अच्छे वक्ता बातचीत करने में जल्दी नही करते। जब वे किसी बात पर ध्यान लगाते है तो समय लेते है। फिर अपनी बात जोर से कहते है।

2). आँखो का सम्पर्क :

अधिकतर लोग अपनी बातचीत के दो-तिहाई समय एक दूसरे से आँखो मे देखकर बात करते है। यह बातचीत करने में आत्मविश्वास और रूची बनाए रखता है।

3). तारीफ: जब कोई व्यक्ति तारीफ भरे शब्दों का इस्तेमाल करके दूसरों की प्रशंसा करता है। यह बातचीत को प्रभावी और उद्देश्यपूर्ण बनाता है।

4). भावनाओं की अभिव्यक्ति: ऐसा व्यक्ति मिलना दुर्लभ है। जो अजनबी के साथ बातचीत में अपने भावों को अभिव्यक्त करता है। बातचीत में भावनाओं को शामिल करना एक गुण है।

(6) सटीक शब्दों का प्रयोग: सुचारू रूप से बातचीत की योग्यता। आपकी सटीक भावनाओं और विचारों को सटीक शब्दों का चुनाव करके व्यक्त करने में सहायक है। यह लगातार आपकी शब्दावली को विकसित कर आसानी से शब्दों को व्यक्त करने की योग्यता विकसित करती है।

जीवनी रेखाचित्र

जीवनी रेखाचित्र एक व्यक्ति के जीवन का विस्तृत वर्णन है। यह शिक्षा, काम, संबंधों व मौत आदि तथ्यों से आधिक बातों को शामिल करते हैं। इसके साथ यह मनुष्यों के जीवन भर की घटनाओं के अनुरूप को दर्शाता है। जिसमें उसकी घनिष्ठ पहलुओं और व्यक्तित्व का विश्लेषण शामिल हो सकता है। आत्मकथा व्यक्ति द्वारा अपने बारे में स्वयं द्वारा लिखी जाती है।

जीवनी रेखाचित्र पढ़ने के उद्देश्य :

(1) एक व्यक्ति या एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व के बारे में सूचनाएं इकट्ठा करने के लिए।
(2) जीवनी में सबसे महत्वपूर्ण सबक प्रदान करने के लिए।
(3) जीवन में संकट को संभालने के लिए अंत दृष्टि रखने के लिए।
(4) दूसरों से प्रेरित होकर कैरियर का चुनाव करने के लिए।
(5) यह पाठकों को वो सीख देते हैं। जो वे दूसरी जगह नहीं सीख पाते

नाटक:

एक नाटक आमतौर पर पात्रों के बीच संवाद सहित नाटककार द्वारा रचित साहित्य का एक रूप है। जिनका इरादा केवल पढ़ने की बजाय नाटकीय प्रदर्शन ज्यादा है। ये विभिन्न स्तरों पर प्रदर्शित हो रहे हैं। नाटक शब्द का उल्लेख, लिखित कार्यों और उनके पूर्ण नाटकीय प्रदर्शन दोनों से संबंधित है।

⇒ नाटकीय साहित्य एक छात्र को कई चुनौतियां प्रस्तुत करता है।

(1) पेंसिल के साथ पढ़ना:

नाटक की रोचकता समझ के लिए एडलर का मानना है। कि पाठक को किसी जर्नल या पेज के नोट्स प्रति क्रियाओं या प्रश्नों को संक्षेप में लिखना चाहिए।

(2) पात्रों की कल्पना चित्र:

एक नाटक आमतौर पर विस्तृत वर्णन नहीं होता है। आमतौर पर मंच पर आने से पहले संक्षेप में नाटककार उस पात्र का वर्णन कर देते हैं।

३. सेटिंग मनन :

कई क्लासिक नाटक विभिन्न युगों की श्रृंखला में लिखे गए हैं। छात्रों को कहानी की समय और जगह संबंधित समझ स्पष्ट होनी चाहिए।

४. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

अगर ऐसा समय और जगह एक महत्वपूर्ण घटक है। तो छात्रों को नाटक में ऐतिहासिक विवरणों को पढ़ना चाहिए।

नाटक पढ़ने के उद्देश्य :

1). खुशी और मनोरंजन के लिए।
2). पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए।
3). तनाव में कमी के लिए।
4). स्मृति बढ़ाने के लिए।
5). मानसिक उत्तेजना प्रदान करने के लिए।

कविताएँ :

साहित्य कम लोगों को सूचना, मनोरंजन और प्रेरणा देने के लिए प्रयोजन से बनाए जाते हैं। ये हमारे पास प्राचीन समय से ही है। कविता का अर्थ उत्पन्न करने के लिए भाषा के सौन्दर्य और गुणों का उपयोग करती है। इसमें स्वरों की एकता, अनुप्रास, आभी अभानिरगुण और लय आदि का प्रयोग होता है।

कविता पढ़ना :

अच्छी कविता पढ़ना आंशिक रूप से दृष्टिकोण और आंशिक रूप से तकनीक पर निर्भर करती है। जिज्ञासा एक उपयोगी दृष्टिकोण है। यहाँ कविता पढ़ने के कुछ सुझाव दिए गए हैं।

मूल विषय की जाँच :

कविता के शीर्षक विषय और स्थिति पर ध्यान से विचार करने की आवश्यकता है।

कविता के रूप का अध्ययन :

पढ़ने वाले को कविता की ध्वनि, कविता के विचारों अन्दर विभाजनों की जानकारी जरूरी है।

कविता पढ़ने के उद्देश्य :

(1) पाठक की कविता को ठीक तरह से पढ़ने में मदद करने के लिए।

(2) पाठक को कविता में निहित विचारों की सुंदरता को समझने के लिए।

(3) पाठक की कल्पनाशक्ति को सुधारने के लिए।

पत्र (Letter) :

पत्र किसी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को लिखित संदेश से सूचना देता है। पत्र दो दलों के बीच संचार के संरक्षण की गारंटी देता है। वे मित्रों और रिश्तेदारों को करीब लाते हैं। व्यवसायिक संबंधों को और समृद्ध करते हैं। ये साहित्य के संरक्षण में योगदान देते हैं। पत्र तीन तरह के होते हैं —

1) औपचारिक।
2) निजी।
3) व्यवसायिक।

पत्रों के लाभ:

पत्रों के मेल पर उपयोगिता का वर्णन निम्नलिखित है:

1. एक पत्र को प्राप्त करने के लिए किसी विशेष उपकरण की जरूरत नहीं होती।
2. पत्र तत्काल, भौतिक व स्थाई स्थायी संचार रिकार्ड रखता है।
3. हस्ताक्षर सहित पत्र ई-मेल की तुलना में मुश्किल से झूठा साबित किया जा सकता है।

पट कथाएं:

पट कथाएं एक फिल्म, रेडियो गेम या टेलिविज़न प्रोग्राम का लिखित रूप होता है। ये पटकथाएं असली कार्य भी हो सकते हैं। या लेखन के मौजूदा कार्य का रूपांतरण भी हो सकते हैं। यह किसी फिल्म का ब्लूप्रिंट होता है। अहकारी वर्तमानकाल में लिखी जाती है।

पटकथा को पढ़ना:

एक पटकथा केवल पढ़ना नहीं दोबारा पढ़ना एक रचनात्मक कार्य है। यह पात्रों के भावात्मक जीवन में सक्रिय संलिप्तता है। एक व्यक्ति दुनिया के पात्रों और उनके अनुभवों को समझाने के लिए

पढ़ता है। यह मौखिक और श्रवण दोनों में ही अनुचित है। जब एक आदमी मन से संसार की कहानी पढ़ता है। और वह उन पात्रों की तरह उसी भावनात्मक रूप से सोचने लग जाता है।

पटकथा पढ़ना अपने आप में एक कला है:

रचनात्मक व प्रभावी ढंग से पढ़ने के लिए आपको जो कुछ कहानी में भौतिक, बौद्धिक और रचनात्मक रूप से घटित हो रहा है। उसको सुनना और देखना है। अपने सबसे अच्छे रूप में अतः क्रियात्मक अनुभव है। जिसमें पाठक या श्रोतागण पात्रों के साथ एक गतिशील व विकसित हो रहे हैं संबंध दर्शाती है।

Report :

एक रिपोर्ट सूचनापद्र कार्य है। जो व्यापक रूप से आमने - सामने आने वाली कुछ घटनाओं के वर्णन करने के लिए विशेष इरादे से बनाई जाती है। रिपोर्ट अक्सर लेखन या भाषण में व्यक्त की जाती है।

ये सूचनाओं का भंडार होती है। जिनका उपयोग निर्णय लेने के लिए किया जाता है। ये सरकार, व्यापार, शिक्षा और विज्ञान और दूसरे क्षेत्रों में किसी प्रयोग जाँच खोज के परिणामों को दर्शाने के लिए प्रयुक्त होती है। यह तीन प्रमुख कारकों पर निर्भर करती है। रिपोर्ट के श्रोतागण, रिपोर्ट के उद्देश्य और सम्प्रेषित की जाने वाली सूचनाएं।

एक रिपोर्ट पढ़ते समय याद रखने वाले मुख्य बिन्दु:

1. रिपोर्ट की संरचना।
2. लेखन शैली।
3. संपर्क सूची।
4. चित्रण पद्धति।
5. प्रासंगिक सामग्री।
6. अभिव्यक्ति।
7. परिणाम।

Objectives of Reading the Report :

1) अच्छी समझ के लिए सामग्री को उचित शीर्षक में विभाजित करना।
2). पाठकों में निष्कर्षों को व्यक्त करना।
3). पाठकों को निष्कर्ष निकालने योग्य बनाना।
4). अपने विचारों को स्पष्ट तरीकों से व्यक्त करने में सक्षम बनाना।

News Report :

यह वर्तमान घटनाओं का ब्योरा है। यह अलग - अलग माध्यमों; मौखिक, लिखित डाकिया माध्यम, प्रसारण और इलेक्ट्रानिक संचार द्वारा चलाई जाती है। समाचार रिपोर्ट के लिए आम विषयों में युद्ध राजनीति व कारोबार, खेलकूद प्रतियोगिता घटनाए और मशहूर हस्तियों के काम इत्यादि शामिल होते हैं। तकनीकी और सामाजिक विकास ने समाचार के फैलने की गति और सामग्री को प्रभावित किया है।

समाचार रिपोर्ट को पढ़ना :

समाचार रिपोर्ट पढ़ना अच्छी बात है। जो अच्छी तरह से क्षैतिज मूल्य प्रदान करती है।

यह राजनीति, अर्थव्यवस्था, मनोरंजन, खेल व्यापार उद्योग विकास के बारे में जानकारी देता है।

(1) यह दुनिया की खबर देता है। इसे पढ़कर आप देश में ही नही बल्कि विदेशों की वर्तमान घटनाओं से अवगत हो जाते है।

(2) यह देश की आर्थिक स्थिति, खेलकूद मनोरंजन, व्यापार और वाणिज्य आदि की खबरें प्रदान करता है।

गहन अध्ययन।
पाठ्य सामग्री का चुनाव और पहचान:

यह अच्छी तरह से डिजाइन पाठ मुख्य विचारों को समाहित करने, मुख्य संकल्पना का वर्णन करते, मुख्य विवरण दर्शाने व जानकारी का समर्थन करने के लिए विभिन्न तरह के ग्राफिक्स व पाठ्य विशेषताओं का प्रयोग करते है। वो पाठ को समझने व पाठ्य सामग्री पर ध्यान लगाने में कम ऊर्जा लगाते है। इस योजना के तहत छात्र पाठ की जांच कराने और विश्लेषण करने के लिए सामान्य से परे जाकर सीखने के लिए ये सुविधाएं कैसे उपयोगी होगी। समाचार पत्र लर्निंग, माड्यूल, ई-लर्निंग और अधिक डिसक्वर कर सकते है।

गहन अध्ययन और पाठ के चिंतन के उद्देश्य:

छात्रों को कक्षा में प्रयुक्त पाठ की मुख्य विशेषताओं की जानकारी देना।
उन्हें ज्यादा दक्षता से सूचना ढूँढने व उनके प्रयोग के योग्य बनाना।
पाठकों को लम्बे पाठों से पाठ्यपद्धति की पहचान करने योग्य बनाना।
छात्रों को पाठ्य सामाग्री को जांचने योग्य बनाना।

समीक्षात्मक पठन की प्रक्रिया को समझना

समीक्षात्मक पठन:

यह एक विश्लेषणात्मक गतिविधि है। पाठक एक पाठ की तत्वों की जानकारी, मूल्यों, मान्यताओं और भाषा उपयोगों को जानने के लिए बार-बार पढ़ता है।
समीक्षात्मक पठन भाषा विश्लेषण का एक रूप है। जो पाठ की अंकित मूल्य को ग्रहण नहीं करता, अपितु इसके गहन कार्य को ध्यान में रखता है।

दोबारा व्याख्या और संगठित करने की योग्यता। बेहतर स्पष्टता व पठनीयता इसके घटक है। इसके अलावा खामियों की पहचान, लेखक के तर्क में कमी, अच्छी तरह से सम्बोधन करने की योग्यता इस प्रक्रिया में आवश्यक तत्व है।

समीक्षात्मक पठन के उद्देश्य:

छात्रों को लेखक पाठ का उद्देश्य समझने योग्य बनाना।
उन्हें अलग-2 पाठों को पढ़ने व अनुक्रिया करने योग्य बनाना।
उन्हें पाठ की लय और प्रभावकारी तत्वों की जानकारी देना।
छात्रों की लेखक के संवादों, विचारों व निष्कर्ष को अपनाने या मना करने की क्षमता विकसित करना।
उन्हें लिखित या मौखिक पाठ्य सामाग्री को चिंतन करने के योग्य बनाना।

समीक्षात्मक पढ़ने की प्रक्रिया

1) लेखकों को दर्शाने की तैयारी:

लेखक विशेष दर्शकों के लिए पाठ तैयार करता है। लक्षित ग्राहक बनने से लेखक के उद्देश्य की जानकारी आसानी से हो जाते है।

2) खुले मन से पढ़ने के लिए तैयार करना:

समीक्षात्मक पठन के ज्ञान की खोज में रहते हैं। वे अपने व्यक्तित्व के अनुरूप कार्य को दोबारा नहीं लिखते।

3) शीर्षक पर विचार आना:

यह स्पष्ट रूप से प्रतीक होता है कि एक शीर्षक लेखक को दृष्टिकोण, लक्ष्य, व्यक्तिगत सोच और उपागमि को दर्शाते हैं।

4) धीरे से पढ़ना:

गहन अध्ययन का यह महत्व है कि जितना धीरे पढ़ोगे उतनी ही ज्यादा पाठ की समझ विकसित होगी।

5) उचित संदर्भों का उपयोग करना:

अगर कोई शब्द स्पष्ट नहीं है तो पाठक किसी अन्य प्रासंगिक शब्द या शब्दकोष की सहायता लेनी चाहिए। हरेक शब्द महत्वपूर्ण है।

6. नोट्स बनाना :

पाठ के मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित हाईलाइट करके नोटबुक में लिखना चाहिए। नोट्स बनाना समीक्षात्मक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण भाग है।

पठन के तरीके

पढ़ने से पहले व पढ़ने के बाद :

पढ़ना लिखना व मौखिक पाठ को समझाने की प्रक्रिया है। यह एक सोचने की प्रक्रिया है। प्रभावी पाठक जानते हैं कि उन्होंने क्या पढ़ा है। इसका क्या अर्थ है। वे अपनी समझ का निरीक्षण करते हैं। जब वे पाठ्यसामग्री का अर्थ भूल जाते हैं तो वे दोबारा अर्थ जानने की कोशिश करते हैं।

पढ़ने से पूर्व :

पूर्व कथन का उद्देश्य ज्ञान की पृष्ठभूमि का निर्माण करना है। अध्यापक जो कुछ छात्र किसी सम्प्रत्यय के बारे में जानते हैं। जो कुछ उन्हें सीखना है। पूर्व पठन कार्य का उद्देश्य अधिगमकर्ताओं को सीखने की सामग्री का चयन करना है।

पूर्व पठन के उद्देश्य :

1 छात्रों को अपने पूर्वज्ञान के आधार पर विषय के बारे में सोचने योग्य बनाना।
2. उन्हें पाठ के संभावित अर्थ की कल्पना करने में सक्षम बनाना।
3 उन्हें पाठ के संपूर्ण अर्थ का समीक्षण योग्य बनाना !

पठन के बाद :

ये कार्य पठन के अंतिम भाग को विस्तृत करने व जाँचने के उद्देश्य से आयोजित किए जाते हैं इसमें सीखने वाले प्रस्तुत पाठ से संबंधित विषयों पर बहस कर उनका विश्लेषण करना है !

पढ़ने के बाद के उद्देश्य :

पाठकों को पाठ की सूचना और विचारों पर योग्य बनाना!
2. उन्हें अपने अनुभव और ज्ञान को संशोधित करने योग्य बनाना।
3. उन्हें पाठ की स्पष्ट समझ विकसित करने योग्य बनाना !

UNIT - II

लेखन कौशलों का विकास : लेखन भाषा का महत्वपूर्ण कौशलों में से एक है। जो हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है कि लेखन के माध्यम से हम दूसरों को सूचित कर सकते हैं, ज्ञान दे कर सकते हैं, समझा सकते हैं, दुःखी कर सकते हैं और बता सकते हैं कि दूसरी भाषा सीखने में केवल लिखने से काम नहीं चलता। चारों भाषाई कौशल आपस में जुड़े हैं। एक व्यक्ति लिखित भाषा का प्रयोग करके एक विचार या संदेश देने योग्य हो जाता है।

लेखन के मूलभूत उद्देश्य : लेखन के सामान्य उद्देश्य वर्णन करना, सुनाना, व्याख्या करना, मनाना, समझाना और दर्शकों का मनोरंजन करना है।

1 कथन : यह लेखन का सबसे आसान तरीका है क्योंकि यह स्वाभाविक तौर पर आता है (व्यावहारिक रूप से हर कोई कहानी कहना और सुनना पसंद करता है) ये आमतौर पर ऐतिहासिक होता है।

2 **विवरण :** यह तस्वीरों को शब्द सहित बताने की एक प्रणाली है। जब हम शब्दों का प्रयोग करते हैं तो हम देखते हैं। उससे ज्यादा उसका बयान करते हैं।

3 **प्रदर्शना :** यह लेखन का वह रूप है जो व्याख्या करता है या सूचित करता है। यह लेखन का व्यावहारिक रूप है। ये लेखकार्य, समाचार रिपोर्ट, अनुदेशन, निर्देशिका, सूचनाप्रद निबंध और पत्र शामिल करता है

4 **अनुनय :** ये लेखन कार्य पाठक को किसी विशेष स्थिति पर राय को समझाने के लिए प्रेरित करता है। प्रेरक लेखन कई मायनों में मुश्किल है। क्योंकि इसे अच्छी तरह लिखने के लिए विषय का ज्ञान, मजबूत तार्किक सोच व तकनीकी कौशल की आवश्यकता है।

विशिष्ट उद्देश्य और विशिष्ट दर्शकों के लिए लेखन !

लेखन के विशिष्ट उद्देश्य लेखक में सामान्य प्रयोजनों से परे लेखन की दिशा प्रदान करता है। विशिष्ट उद्देश्य प्रयोजनों पर निर्भर रहता है।

→ आप दर्शकों को क्या सूचित कर रहे हैं।
→ आप दर्शकों को क्या समझाने का प्रयास कर रहे हैं
→ आपका ध्यान किस ओर है?

विशिष्ट दर्शकों के लिए लेखन :-

एक बार आपने अपने दर्शकों की पहचान कर ली है। और उन्हें आकर्षित करने का सबसे उपयुक्त तरीका सोच लिया तो ये आपको एक बहुत सी महत्वपूर्ण सूची बनाने के लिए उपयोगी है।

(1). आपके दर्शक कौन है।
(2) आपके दर्शक पहले से ही क्या जानते है।
(3) वो क्या जानना चाहते है।

आपके दर्शकों को जानना आपकी सूचना देने संबंध में सहायक होगा। आपके द्वारा प्रस्तुत सामग्री को समझने और संगठित करने में मदद करेगा। यह दस्तावेजों की लय और संरचना को प्रभावित करता है। विशिष्ट उद्देश्यों दर्शकों के लिए लिखने में हमें विशिष्ट उद्देश्यों का चयन करना पड़ता है। प्रभावी लेखन के लिए हमें निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है।—

(1) लेखकों व पाठकों के बीच क्या संबंध है:

यदि आपका अपने पाठकों का अधिकार है। और उन पर आम रोजगार नियों शिव रहे है, तो आपके स्वर अधिक शिक्षाप्रद और

प्रमाणिक होगे। आप यहा विनम्र सुझाव दो न कि निर्देश। पाठको के लिए हमेशा विनम्र व सम्मान रखना चाहिए।

(2) पाठक कितना जानता है:

पाठक का ज्ञान आपसे अधिक है या क्या वे विशेष शब्दावली से परिचित है या उन्हे इनका ज्ञान देने की जरुरत है। उन्हे विषय की पृष्ट भूमि का ज्ञान है और आपको ये भी ध्यान में रखने की जरुरत है कि आपका पाठक पहले से ही क्या जानता है।

(3) क्या दर्शक आपसे सहमत होगा या असहमत:

यह सोचना लेखन से पहले महत्वपूर्ण है कि क आप पाठक को प्रभावित करने के तरीको में लिख सकते है। कभी - कभी आपके दर्शक आपसे सहमत होते है। तो आप उपयोगी निर्माणकारी दृष्टिकोण अपनाते है ताकि अत्याधिक प्रयास से बचने की कोशिश करते है। कि नजरिए में बदलाव किस प्रकार लाभकारी है।

4. पाठक जानकारी का क्या करेगे:

क्या पाठक एक निर्णय लेगा या आपके द्वारा प्रदत्त जानकारी के आधार पर कार्य करेगा। अगर ऐसा है तो आपको एक अच्छा निर्णय लेने या कार्य करने के लिए सभी आवश्यक जानकारी शामिल करनी होगी।

ये सभी बातें ध्यान में रखकर आप आसानी से लिख सकते है। जो पाठकों के लिए अति महत्वपूर्ण होगा।

Writting Process

कला का अनुभव:

1. तैयारी:

पहले छात्र पाठ पढते है। फिर पता लगाना है कि छात्र क्या लिखना चाहते है। मस्तिष्क तूफान और डूडल कम्पनी का चरम बिन्दु पर पता लगा रहे।

2. संगठन:

छात्र के विचारों को संगठित करके उनके क्रम में लगाना चाहिए। जहाँ छात्र अपने विचार व्यक्त कर सके।

सामूहिक। सहयोगात्मक लेखन के नुकसान :

- समूह में कड़ी मेहनत करने वालों को अन्य की अपेक्षा समान योगदान करने का मान मिलेगा।
- कुछ सदस्यों को ऐसा लगता है। कि वे अधिक सक्षम सदस्यों द्वारा दबाए जा रहे हैं।
- पहुँच समय और जगह का तालमेल बिठाना मुश्किल होता है।
- यहा ज्यादा बड़े प्रोजेक्ट पर काम करने में अधिक समय लगता है।
- यह भागों में किया गया काम है इस तरह पूरी परियोजना असमान लग सकती है।

प्रभावी सहयोगात्मक लेखन के लिए ध्यान में रखे जाने वाले मुख्य बिन्दु :

- यह सुनिश्चित करे कि आपके समूह सहयोगी चर्चा उक साथ शामिल है।
- कार्य करते समय सभी सदस्यों को अच्छे समूह के नियमों का पालन करना चाहिए।

लेखन संपादक:

सम्पादक की प्रक्रिया लिखित, दृश्य श्रव्य और सूचना संप्रेषित करने वाली फिल्म मीडिया की तैयारी और चयन करने से संबंधित है। इस प्रक्रिया में सुधार भी शामिल है। जिनका उद्देश्य एक सही-गलत संगत और सटीक और पूर्ण बोध करना है। संशोधन प्रक्रिया अक्सर लेखक के अपने विचार से शुरू होती है। और लेखक व सम्पादक के बीच कार्य पूरा होने तक सहयोगी जारी रहता है। ऐसे में सम्पादक में तकनीकी कौशल, मानव संबंध और विधियों का एक संक्षिप्त सेट शामिल करना है।

संपादन / संशोधन के उपयोग:

1. यह लेखन गुणवत्ता में सुधार लाता है।
2. यह अस्पष्टता पठनीयता व संगठन में सुधार करता है।
3. यह संक्षिप्त सशक्त और कमी रहित पाठ तैयार करता है।
4. यह जटिल विचारों को स्पष्ट संचारित करता है।